गमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिमाणाणुगमो वग्गणभागाभागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ॥ ७० ॥

संपहि वग्गणा दुविहा–अब्भंतरवग्गणा बाहिरवग्गणा चेदि । जा सा बाहिर-वग्गणा सा पंचण्हं सरीराणं चदुहि अणुयोगद्दारेहि उवरि भण्णिहिदि✲ । जा सा अब्भंतरवग्गणा सा दुविहा एगसेडि-णाणासेडिभेएण । तत्थ एगसेडिवग्गणाए इमाणि सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति । संपहि एदेहि सोलसअणुयोगद्दारेहि जहाकमेण वग्गणाणमणु☼गमं कस्सामो—

वग्गणणिक्खेवे त्ति छव्विहे वग्गणणिक्खेवे– णामवग्गणा ट्ठवण-वग्गणा दव्ववग्गणा खेत्तवग्गणा कालवग्गणा भाववग्गणा चेदि ॥७१॥

निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः । सो किमट्ठं कीरदे? प्रकृत⊗ प्ररूपणार्थम् । उक्तंच–

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।
संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १ ॥

छच्चेव णिक्खेवा एत्थ किमट्ठं कदा? ण एस दोसो, छच्चेवे त्ति णियमाभावादो ।

वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणा परिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७० ॥

वर्गणा दो प्रकारकी है–आभ्यन्तरवर्गणा और बाह्यवर्गणा । जो बाह्यवर्गणा है वह पाँच शरीरों सम्बन्धी चार अनुयोगद्वारोंके द्वारा आगे कहेंगे । जो अभ्यन्तरवर्गणा है वह एकश्रेणि और नानाश्रेणिके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं । अब इन सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यथाक्रमसे वर्गणाओंका विचार करेंगे ।

वर्गणानिक्षेपका प्रकरण है । वर्गणानिक्षेप छह प्रकारका है– नामवर्गणा, स्थापनावर्गणा, द्रव्यवर्गणा, कालवर्गणा और भाववर्गणा ॥ ७१ ॥

जो निश्चयमें रखता है वह निक्षेप है ।

शंका–वह निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान–प्रकृतका निरूपण करनेके लिये । कहा भी है– अप्रकृत अर्थका निराकरण करनेके लिये, प्रकृत अर्थका कथन करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

शंका–यहाँ छह ही निक्षेप किसलिये किये गये हैं ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, निक्षेप छह ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है ।

✲ अ. प्रतौ ' भणिहिदि ' इति पाठः । ☼ अ. आ. प्रत्योः ' –मणुगमणं ' इति पाठः ।
⊗ ता. अ. आ. प्रतिषु ' प्रकृति– ' इति पाठः ।

वग्गणासद्दो णामवग्गणा। सो एसो त्ति बुद्धीए वग्गणासरूवेण संकप्पिदत्थो ट्ठवणवग्गणा। दव्ववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमदव्ववग्गणाभेएण। वग्गणापाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्ववग्गणा णाम। णोआगमदव्ववग्गणा तिविहा जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्त-णोआगमदव्ववग्गणाभेएण। जाणुगसरीर-भवियदव्ववग्गणाओ सुगमाओ। तव्वदिरित्त-दव्ववग्गणा दुविहा– कम्मवग्गणा णोकम्मवग्गणा चेदि। तत्थ कम्मवग्गणा णाम अट्ठकम्मक्खंधवियप्पा। सेसएक्कोणवीसवग्गणाओ णोकम्मवग्गणाओ। एगागासोगाहणप्पहुडि पदेसुत्तरादिकमेण जाव देसूणघणलोगे त्ति ताव एदाओ खेत्तवग्गणाओ। कम्मदव्वं पडुच्च समयाहियावलियप्पहुडि जाव कम्मट्ठिदि✽ त्ति णोकम्मदव्वं पडुच्च एगसमयादि जाव असंखेज्जा लोगा त्ति ताव एदाओ कालवग्गणाओ। भाववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमभाववग्गणाभेएण। वग्गणापाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभाववग्गणा। ओदइयादिपंचण्णं भावाणं जे भेदा ते णोआगमभाववग्गणा। एवं वग्गणाणिक्खेवे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं❋।

वग्गणणयविभासणदाए को णओ काओ वग्गणाओ इच्छदि। णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ॥ ७२॥

कुदो? दव्वट्ठियाणं तिण्णमेदेसिं णयाणं विसए छण्णं णिक्खेवाणमत्थित्तं पडि

वर्गणाशब्द नामवर्गणा है। 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धि द्वारा वर्गणारूपसे संकल्पित अर्थ स्थापनावर्गणा है। द्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है– आगमद्रव्यवर्गणा और नोआगमद्रव्यवर्गणा। वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला किन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आगमद्रव्यवर्गणा है। नोआगमद्रव्यवर्गणा तीन प्रकारकी है– ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यवर्गणा, भाविनोआगमद्रव्यवर्गणा और तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा। ज्ञायकशरीर और भाविनोआगमद्रव्यवर्गणायें सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है–– कर्मवर्गणा और नोकर्मवर्गणा। उनमेंसे आठ प्रकारके कर्मस्कन्धोंके भेद कर्मवर्गणा है, तथा शेष उन्नीस प्रकारकी वर्गणायें नोकर्मवर्गणायें हैं। एक आकाशप्रदेशप्रमाण अवगाहनासे लेकर प्रदेशोत्तर आदिके क्रमसे कुछ कम घनलोक तक ये सब क्षेत्रवर्गणायें हैं। कर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समय अधिक तक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट कर्मस्थिति तक और नोकर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असख्यात लोकप्रमाण काल तक ये सब कालवर्गणायें हैं। भाववर्गणा दो प्रकारकी है– आगमभाववर्गणा और नोआगमभाववर्गणा। वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीव आगमवर्गणा है। औदयिक आदि पाँच भावोंके जो भेद हैं वे सब नोआगमभाववर्गणा हैं। इस प्रकार वर्गणानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

वर्गणानयविभाषणताका प्रकरण है–– कौन नय किन वर्गणाओंको स्वीकार करता है? नैगम, व्यवहार संग्रहनय सब वर्गणाओंको स्वीकार करते हैं॥ ७२॥

क्योंकि, इन तीनों द्रव्यार्थिक नयोंके छहों निक्षेप विषय हैं इस बातके स्वीकार करनेमें कोई

✽ ता. प्रतौ '–प्पहुडि कम्मट्ठिदि' इति पाठः। ❋ ता. प्रतौ '-द्दारं (१)।' इति पाठः।

विरोहाभावादो।

उजुसुदो ट्ठवणवग्गणां णेच्छदि ॥ ७३ ॥

अण्णदव्वस्स संकप्पवसेण अण्णदव्वसरूवावत्तिविरोहादो।

सद्दणओ णामवग्गणां भाववग्गणां च इच्छदि ॥ ७४ ॥

एदस्स णयस्स विसए अण्णेसिं णिक्खेवाणमभावादो। एत्थ केण णिक्खेवेण पयदं? णोआगमपोग्गलदव्वणिक्खेवेण पयदं, जीव-धम्माधम्म-कालागासदव्व✱ वग्गणाहि एत्थ पओजणाभावादो।

वग्गणादव्वसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि चोद्दस अणुयोगद्दाराणि- वग्गणापरूवणा वग्गणाणिरूवणा वग्गणाधुवाधुवाणुगमो वग्गणासांतरणिरंतराणुगमो वग्गणाओजजुम्माणुगमो वग्गणाखेत्ताणुगमो वग्गणाफोसणाणुगमो वग्गणाकालाणुगमो वग्गणाअंतराणुगमो वग्गणाभावाणुगमो वग्गणाउवणयणाणुगमो वग्गणापरिमाणाणुगमो वग्गणाभागाभागाणुगमो वग्गणाअप्पाबहुए त्ति ॥ ७५ ॥

वग्गणापरूवणं सोलसेहि अणुयोगद्दारेहि कहामो त्ति पइज्जां काऊण पुणो तत्थ

विरोध नहीं आता।

ऋजुसूत्रनय स्थापनावर्गणाको स्वीकार नहीं करता ॥ ७३ ॥

क्योंकि, संकल्पवश अन्य द्रव्यका अन्य द्रव्यरूपसे परिवर्तन होनेमें विरोध आता है।

शब्दनय नामवर्गणा और भाववर्गणाको स्वीकार करता है ॥ ७४ ॥

क्योंकि, इस नयके विषय अन्य निक्षेप नहीं हैं।

शंका- यहाँ किस निक्षेपका प्रकरण है?

समाधान-नोआगमपुद्गलद्रव्यनिक्षेपका प्रकरण है; क्योंकि, यहाँपर जीव, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यवर्गणाओंसे प्रयोजन नहीं है।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका प्रकरण है। उसमें ये चौदह अनुयोगद्वार हैं- वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तर- निरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७५ ॥

शंका-वर्गणाप्ररूपणा सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करके फिर वहाँ

✱ अ. प्रतौ '-कालागमदव्व-' इति पाठः।

आइल्लाणं दोण्णं चेव अणुओगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसतत्थतणचोद्दसेहि अणुओगद्दारेहि वग्गणपरूवणमकाऊण वग्गणदव्वसमुदाहारो किमिदि✿ वोत्तुमारद्धो ? ण वग्गणपरूवणा वग्गणाणमेगसेडि भणदि । वग्गणदव्वसमुदाहारो पुण वग्गणाणं णाणेगसेडी भणदि, तेण वग्गणदव्वसमुदाहारपरूवणा वग्गणपरूवणाविणाभाविणि त्ति कट्टु वग्गणदव्वसमुदाहारो वोत्तुमाढत्तो; ❀ अण्णहा गंथबहुत्तभएण पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७६ ॥

एत्थ ताव एगसेढिमस्सिदूण वग्गणपरूवणं कस्सामो-एगपदेसियपोग्गलदव्ववग्गणा परमाणुसरूवा; अण्णहा एगपदेसिय त्ति विसेसणाणुववत्तीए । परमाणू च अपच्चक्खो; 'णेव इंदिए गेज्झं'✽ इदि वयणादो । तदो तत्थ इमा इदि पच्चक्खणिद्देसो ण घडदे ? ण, आगमपमाणेण सिद्धपरमाणुविसयबोहे पच्चक्खे संते पच्चक्खणिद्देसोववत्तीए परियम्मे परमाणू अपदेसो त्ति वुत्तो, एत्थ पुण परमाणू एयपदेसो त्ति भणिदो कधमेदेसिं सुत्ताणं ण विरोहो ? ण एस दोसो; एगपदेसं मोत्तूण विदियादिपदेसाणं तत्थ पडिसेहकरणादो । न विद्यन्ते द्वितीयादयः प्रदेशाः यस्मिन् सोऽप्रदेशः परमाणु-

प्रारम्भके दो ही अनुयोगद्वारोंका कथन करके और शेष चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा वर्गणाका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन किसलिए किया जा रहा है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन करता है, किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी नाना और एक श्रेणियोंका कथन करता है, इसलिए वर्गणाद्रव्यसमुदाहारप्ररूपणा वर्गणाप्ररूपणाकी अविनाभाविनी है ऐसा समझ कर वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन आरम्भ किया है । अन्यथा ग्रन्थके बहुत बढ़ जानेका भय था जिससे पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता ।

वर्गणाकी प्ररूपणा करनेपर यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । ७६॥

यहाँ सर्व प्रथम श्रेणिका अवलम्बन लेकर वर्गणाका कथन करते हैं--एकप्रदेशी पुद्गलद्रव्यवर्गणा परमाणुस्वरूप होती है; अन्यथा 'एकप्रदेशी' यह विशेषण नहीं बन सकता ।

शंका-परमाणु अप्रत्यक्ष होता है ; क्योंकि, ' उसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं होता ' ऐसा सूत्रवचन है । इसलिये उसके लिये सूत्रमें 'इमा' ऐसा प्रत्यक्षनिर्देश नहीं बन सकता ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, आगमप्रमाणसे सिद्ध परमाणुविषयक ज्ञानके प्रत्यक्षरूप होनेपर ' इमा ' इस प्रकार प्रत्यक्षनिर्देश बन जाता है ।

शका-परिकर्ममें परमाणुको अप्रदेशी कहा है परन्तु यहाँपर उसे एकप्रदेशी कहा हैं, इसलिये इन दोनों सूत्रोंमें विरोध कैसे नहीं होगा ?

समाधान-यह कोई दोष नहीं है ; क्योंकि, परमाणुके एकप्रदेशको छोड़कर द्वितीयादि प्रदेश नहीं होते इस बातका परिकर्ममें निषेध किया है । जिसमें द्वितीयादि प्रदेश नहीं हैं वह

✿ ता. आ. प्रत्योः ' -हारो त्ति किमिदि ' इति पाठः । ❀ अ. प्रतौ '-मादत्तो' आ. प्रतौ ' -मादत्तादो ' इति पाठः । ✽ ता. प्रतौ ' इंदियगेज्झं ' इति पाठः ।

रिति। अन्यथा खरविषाणवत् परमाणोरसत्त्वप्रसङ्गात्। कधं परमाणुस्स पोग्गलत्तं ? अण्णेहि मेलणसत्तिसंभवादो। परमाणूणं परमाणुभावेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो दव्वभावो ण जुज्जदे ? ण, पोग्गलभावेण उप्पाद-विणासवज्जिएण परमाणूणं पि दव्वत्तसिद्धीदो।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७७ ॥

दोण्णं परमाणूणं अजहण्णणिद्ध-ल्हुक्खगुणाणं समुदयसमागमेण दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि। परमाणूणं समागमो किमेगदेसेण होदि आहो सव्वप्पणा? ण ताव सव्वप्पणा; अणंताणं पि परमाणूणं समागमेण परमाणुमेत्तपरिमाणप्पसंगादो✠। ण च एवं; सेसासेसवग्गणाणमभावप्पसंगा। ण एगदेसेण समागमो वि परमाणुस्स सावयवत्तप्पसंगादो। ण तं पि; अणवत्थापसंगादो। णाणवत्था वि; सयलथूलकज्जाणमणुप्पत्तिसंगादो। ण च एगपदेसाणं दोण्हं परणाणूणं सव्वप्पणा समागमं मोत्तूण एगदेसेण समागमो अत्थि; बिदियादिपदेसाभावादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे-दव्वट्ठिय-

---

अप्रदेश परमाणु है यह उसकी व्युत्पत्ति है। यदि 'अप्रदेश' पदका यह अर्थ न किया जाय तो जिस प्रकार गधेके सींगोंका असत्त्व है उसी प्रकार परमाणुके भी असत्त्वका प्रसंग आता है।

शंका-- परमाणु पुद्गलरूप है यह बात कैसे सिद्ध होती है ?

समाधान-- उसमें अन्य पुद्गलोंके साथ मिलनेकी शक्ति सम्भव है, इससे सिद्ध होता है कि परमाणु पुद्गलरूप है।

शंका-- परमाणु सदा काल परमाणुरूपसे अवस्थित नहीं रहते इसलिये उनमें द्रव्यपना नहीं बनता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, परमाणुओंका पुद्गलरूपसे उत्पाद और विनाश नहीं होता इसलिये उनमें भी द्रव्यपना सिद्ध होता है।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥ ७७ ॥

अजघन्य स्निग्ध और रूक्ष गुणवाले दो परमाणुओंके समुदायसमागमसे द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है।

शंका-- परमाणुओंका समागम क्या एकदेशेन होता है या सर्वात्मना होता है ? सर्वात्मना तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनन्त परमाणुओंका भी यदि समागम हो जाय तो भी परमाणुमात्र परिणाम प्राप्त होता है। पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणुवर्गणाके सिवा शेष सब वर्गणाओंका अभाव प्राप्त होता है। एकदेशेन समागम भी नहीं बनता, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणु सावयव प्राप्त होता है। यदि परमाणुको सावयव माना जाता है तो अनवस्था दोष आता है। अनवस्था नही आवे यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब स्थूल कार्योंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है। और एकप्रदेशी दो परमाणुओंके सर्वात्मना समागमको छोडकर एकदेशेन समागम बन नहीं सकता, क्योंकि, परमाणुके द्वितीयादि प्रदेश नहीं पाये जाते ?

✠ अ प्रतौ 'परिमाणत्तप्पसंगादो' इति पाठः।

णए अवलंबिज्जमाणे दोण्णं परमाणूणं सिया सव्वप्पणा समागमो; णिरवयवत्तादो। जे जस्स कज्जस्स आरंभया परमाणू ते तस्स अवयवा होंति। तदारद्धकज्जं पि अवयवी होदि। ण च परमाणू अण्णेहिंतो णिप्पज्जदि, तस्स आरंभयाणमण्णेसिमभावादो। भावे वा ण एसो परमाणू; एत्तो सुहुमाणमण्णेसिं संभवादो। ण च एगसंखंकियम्मि परमाणुम्मि बिदियादिसंखा अत्थि; एक्कस्स दुब्भावविरोहादो। किं च जदि परमाणुस्स अवयवो अत्थि तो परमाणुणा अवयविणा होदव्वं। ण च एवं; अवयवविभागेण अवयवसंजोगस्स विणासे संते परमाणुस्स अभावप्पसंगादो। ण च एवं; कारणाभावेण सयलथूलकज्जाणं पि अभावप्पसंगादो। ण च कप्पियसरूवा अवयवा होंति; अव्ववत्थापसंगादो। तम्हा परमाणुणा णिरवयवेण होदव्वं। तदो सिद्धो सव्वप्पणा परमाणूणं सिया समागमो। ण च णिरवयवपरमाणूहिंतो थूलकज्जस्स अणुप्पत्ती; णिरवयवाणं पि परमाणूणं सव्वप्पणा समागमेण थूलकज्जुप्पत्तीए विरोहासिद्धीदो। पज्जवट्ठियणए✡ अवलंबिज्जमाणे सिया एगदेसेण समागमो। ण च परमाणूणमवयवा णत्थि; उवरिमहेट्ठिममज्झिमोवरिमोवरिमभागाणमभावे परमाणुस्स वि अभावप्पसंगादो। ण च एदे भागा

समाधान— यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं कि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर दो परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है, क्योंकि, परमाणु निरवयव होता है। जो परमाणु जिस कार्यके आरम्भक होते हैं वे उसके अवयव होते हैं और उनके द्वारा आरम्भ किया गया कार्य अवयवी होता है। परमाणु अन्यसे उत्पन्न होता है यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, उसके आरम्भक अन्य पदार्थ नहीं पाये जाते। और यदि उसके आरम्भक अन्य पदार्थ होते हैं ऐसा माना जाता है तो यह परमाणु नहीं ठहरता, क्योंकि, इस तरह इससे भी सूक्ष्म अन्य पदार्थोंका सद्भाव सिद्ध होता है। एक संख्यावाले परमाणुमें द्वितीयादि संख्या होती है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, एकको दोरूप माननेमें विरोध आता है। दूसरी बात— यदि परमाणुके अवयव होते हैं ऐसा माना जाय तो परमाणुको अवयवी होना चाहिये। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, अवयवके विभागद्वारा अवयवोंके संयोगका विनाश होनेपर परमाणुका अभाव प्राप्त होता है। पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, कारणका अभाव होनेसे सब स्थूल कार्योंका भी अभाव प्राप्त होता है। परमाणुके कल्पितरूप अवयव होते हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर अव्यवस्था प्राप्त होती है। इसलिये परमाणुको निरवयव होना चाहिये। अतः सिद्ध होता है कि परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है। निरवयव परमाणुओंसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति नहीं बनेगी यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, निरवयव परमाणुओंके सर्वात्मना समागमसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर कथंचित् एकदेशेन समागम होता है। परमाणुके अवयव नहीं होते यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि उसके उपरिम, अधस्तन, मध्यम और उपरिमोपरिम भाग न हों तो परमाणुका ही अभाव प्राप्त होता है। ये भाग कल्पितरूप होते हैं यह

✡ अ. प्रतौ 'ट्ठियाणए' इति पाठः।

संकप्पियसरूवा; उड्ढाधोमज्झिमभागाणं उवरिमो✿वरिमभागाणं च कप्पणाए विणा उवलंभादो। ण च अवयवाणं सव्वत्थ विभागेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, सयलवत्थूणमभावप्पसंगादो। ण च भिण्णपमाणगेज्झाणं भिण्णदिसाणं च एयत्तमत्थि, विरोहादो। ण च अवयवेहि परमाणू णारद्धो, अवयवसमूहस्सेव परमाणुत्तदंसणादो। ण च अवयवाणं संजोगविणासेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, अणादिसंजोगे तदभावादो। तदो सिद्धा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा। एसा परूवणा उवरि सव्वत्थ✿परूवेदव्वा।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-परित्तपदेसिय-अपरित्तपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७८ ॥

पुव्वपरूविदएयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा✱ एयवियप्पा। दुपदेसियपर-

कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, परमाणुमें ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यभाग तथा उपरिमोपरिमभाग कल्पनाके विना भी उपलब्ध होते हैं। तथा परमाणुके अवयव हैं इसलिये उनका सर्वत्र विभाग ही होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर तो सब वस्तुओंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है। जिनका भिन्न भिन्न प्रमाणोंसे ग्रहण होता है, और जो भिन्न भिन्न दिशावाले हैं वे एक हैं यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर विरोध आता है। अवयवोंसे परमाणु नहीं बना है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अवयवोंके समूहरूप ही परमाणु दिखाई देता है। तथा अवयवोंके सयोगका विनाश होना चाहिये यह भी कोई नियम नहीं है, क्योंकि, अनादि संयोगके होनेपर उसका विनाश नहीं होता। इसलिये द्विप्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणा सिद्ध होती है। यह प्ररूपणा आगे सर्वत्र करनी चाहिये।

विशेषार्थ— यहाँ प्रसंगसे परमाणु सावयव है कि निरवयव इस बातका विचार किया गया है। परमाणु एक और अखण्ड है, इसलिये तो वह निरवयव माना गया है और उसमें ऊर्ध्वादि भाग होते हैं इसलिये वह सावयव माना गया है। द्रव्यार्थिकनय अखण्ड द्रव्यको स्वीकार करता है और पर्यायार्थिकनय उसके भेदोंको स्वीकार करता है। यही कारण है कि द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा परमाणुको निरवयव कहा है और पर्यायार्थिकनयकी अपेक्षा सावयव कहा है। परमाणुका यह विश्लेषण केवल बुद्धिका व्यायाम नहीं है, किन्तु वास्तविक है ऐसा यहाँ समझना चाहिये।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीतप्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७८ ॥

पहले कही गई एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक प्रकारकी होती है। तथा द्विप्रदेशी

✿ अ. आ. प्रत्योः '-परिमो' इति पाठः। ✿ ता. प्रतौ 'उवरिमसव्वत्थ' इति पाठः।
✱ ता. प्रतौ '-वग्गणा (ए)' इति पाठः।

माणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव उक्कस्ससंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणे त्ति ताव एसा संखेज्जपदेसियवग्गणा णाम रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तवियप्पा । एवमेदाओ दोण्णि वग्गणाओ २। उक्कस्ससंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा होदि । पुणो रूवुत्तरकमेण असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा ताव गच्छंति जाव उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणे त्ति । उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जादो उक्कस्ससंखेज्जे सोहिदे सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ चेव असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ । एदाओ संखेज्जपदेसियवग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एदाओ सव्वाओ वि तदिया असंखेज्जपदेसियवग्गणा होदि ३ ।

परित्त-अपरित्तवग्गणाओ सुत्तुद्दिट्ठाओ अणंतपदेसियवग्गणासु चेव णिवदंति, अणंत-अणंताणंतेहिंतो वदिरित्तपरित्त अपरित्ताणमभावादो । तेण✻तव्विसेसणभावेण परित्तापरित्तणिद्देसो परूवेयव्वो ।

उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि।तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धेहिंतो अणंतगुणहीणमद्धाणं गच्छदि । सगजहण्णादो अणंतपदेसियउक्कस्सवग्गणाणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिम-

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तक यह सब संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा है । इसके एक कम उत्कृष्ट संख्यातभेद होते हैं । इस प्रकार ये दो वर्गणायें हुईं ।२। उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः उत्तरोत्तर एक एकके मिलाने पर असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं और ये सब उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक होती हैं । उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातमेंसे उत्कृष्ट संख्यातके न्यून करने पर शेषमें जितने रूप (अंक) हैं उतनी ही असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं । ये संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंसे असंख्यातगुणी होती हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यातलोक गुणकार है । ये सब ही तीसरी असंख्यातप्रदेशी वर्गणा है । ३ ।

सूत्रमें कही गईं परीतवर्गणायें और अपरीतवर्गणायें अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें ही सम्मिलित हैं, क्योंकि, अनन्त और अनन्तानन्तसे अतिरिक्त परीत और अपरीत संख्या उपलब्ध नहीं होता । इसलिये अनन्तके विशेषणरूपसे ही परीत और अपरीतके निर्देशका कथन करना चाहिये ।

उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य अनन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः क्रमसे एक एककी वृद्धि होते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान आगे जाते हैं । अपने जघन्यसे अनन्तप्रदेशी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

✻ अ. आ. प्रत्योः 'तव्विसेसेण-' इति पाठः ।

भाग✠मेत्तो । परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणसद्दो ति-चदुपदेसियादिसु सव्वत्थ जोजेयव्वो, अंतदीवयत्तादो । एवमेसा अणंतपदेसियदव्ववग्गणा चउत्थी ४ । कुदो? एदासिमेयत्तं ? अणंतभावेण । एदाओ चत्तारि वि वग्गणाओ अगेज्झाओ ।

अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरि आहार-दव्ववग्गणा णाम ।। ७९ ।।

उक्कस्सअणंतपदेसियदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया आहारदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण❀ सिद्धाणमणंतभागमेत्तवियप्पे गंतूण समप्पदि । जहण्णादो उक्कस्सिया विसेसाहिया । विसेसो पुण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो होंतो वि आहारउक्कस्सदव्ववग्गणाए अणंतिमभागो । कधमेदं णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो । ओरालिय-वेउव्विय- आहारसरीरपाओग्गपोग्गलक्खंधाणं आहारदव्ववग्गणा त्ति सण्णा । एवमेसा पंचमी वग्गणा ५ ।

आहारदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ।। ८० ।।

उक्कस्सआहारदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते पढमअगहणदव्ववग्गणाए

सूत्रमें आया हुआ 'परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा' शब्द त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदि पदोंमें सर्वत्र जोड़ना चाहिये, क्योंकि वह अन्तदीपक है । इस प्रकार यह अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणा चौथी है । ४ । ये सब वर्गणायें एक क्यों हैं ? क्योंकि, ये सब अनन्तरूपसे एक हैं । ये चारों ही वर्गणायें अग्राह्य हैं ।

विशेषार्थ–प्रथम परमाणुवर्गणा, दूसरी संख्यातवर्गणा, तीसरी असंख्यातवर्गणा और चौथी अनन्तवर्गणा ये चार प्रकारकी वर्गणायें अग्राह्य हैं । इसका यह आशय है कि जीव द्वारा इनका ग्रहण नहीं होता । शेष कथन सुगम है ।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाके ऊपर आहारद्रव्यवर्गणा है ।।७९।।

उत्कृष्ट अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक अंकके मिलाने पर जघन्य आहार द्रव्यवर्गणा होती है । फिर एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भेदोंके जाने पर अन्तिम आहार द्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता हुआ भी उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है ।

शंका यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरके योग्य पुद्गल स्कन्धोंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । इस प्रकार यह पाँचवीं वर्गणा है । ५ ।

आहारद्रव्यवर्गणाके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है ।। ८० ।।

उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर प्रथम अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी

✠ अ. आ. प्रत्यो. '–मणंतभाग–' इति पाठः । ❀ अ. प्रतौ 'गुणं' इति पाठः ।

सव्वजहण्णवग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया अगहणदव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सिया अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवमेसा छट्ठी वग्गणा ६ । कधमेदासिं✪ वग्गणाणमेयत्तं ? अगहणभावेण । पंचण्णं सरीराणं भासा-मणाणं च अजोग्गा जे पोग्गलक्खंधा तेसिमगहणवग्गणा त्ति सण्णा ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्ववग्गणा णाम । ८१ ॥

उक्कस्सियाए अगहणदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया तेजादव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया तेजइयसरीरदव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा सत्तमी वग्गणा ७। एदिस्से पोग्गलक्खंधा तेजइयसरीरपाओग्गा✿ तेणेसा गहणवग्गणा।

तेयादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८२ ॥

तेजइयसरीरउक्कस्सदव्व❋वग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते बिदियअगहणदव्ववग्गणाए पढमिल्लिया सव्वजहण्णअगहणदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण बिदियअगहणदव्ववग्गणाए

सर्वजघन्य वर्गणा होती है। फिर एक एक बढाते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणा होती है। यह जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भाग-प्रमाण गुणकार है। इस प्रकार यह छठी वर्गणा है। ६।

शंका-- इन वर्गणाओंमें एकत्व कैसे है ?

समाधान-- अग्रहणपनेकी अपेक्षा इनमें एकत्व है।

पाँच शरीर तथा भाषा और मनके अयोग्य जो पुद्गलस्कन्ध हैं उनकी अग्रहण-वर्गणा संज्ञा है।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाके ऊपर तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ८१ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलानेपर सबसे जघन्य तैजसशरीर द्रव्यवर्गणा होती है। पुनः एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा होती है। यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है। विशेषका प्रमाण क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। यह सातवीं वर्गणा है। ७। इसके पुद्गलस्कन्ध तैजसशरीरके योग्य होते हैं, इसलिये यह ग्रहणवर्गणा है।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८२ ॥

उत्कृष्ट तैजसशरीर द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासंबंधी

✪ ता. अ. आ. प्रतिषु '-मेदेसिं' इति पाठः। ✿ अ. आ. प्रत्योः '-सरीरपाओग्गा' इति पाठः। ❋ ता प्रतौ '-सरीरदव्व' इति पाठः।

उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णादो सगउक्कस्सवग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो एसा अट्ठमी वग्गणा ८ । पंचण्णं सरीराणं गहण✿पाओग्गा ण होदि त्ति अगहणवग्गणसण्णिदा । जहण्णादो उक्कस्सवग्गणा अणंतगुणे त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम । ८३ ।

अगहणउक्कस्सदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया भासादव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण❀ सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण भासादव्ववग्गणाए✪ उक्कस्सिया दव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगजहण्णवग्गणाए अणंतिमभागो । को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा णवमी वग्गणा९ । भासादव्ववग्गणाए परमाणुपोग्गलक्खंधा चदुण्णं भासाणं पाओग्गा । पटह♠-भेरी काहलब्भगज्जणादिसद्दाणं पि एसा चेव वग्गणा पाओग्गा । कधं काहलादिसद्दाणं भासाववएसो ?

पहली सर्वजघन्य अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह आठवीं वर्गणा है । ८ । यह पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं है इसलिये इसकी अग्रहण द्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

शंका–जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषा द्रव्यवर्गणा है ॥ ८३ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य भाषा द्रव्यवर्गणा होती है । इससे आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर भाषा द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? अपनी जघन्य वर्गणाका अनन्तवाँ भाग विशेषका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवाँ भाग प्रतिभाग है । यह नौवीं वर्गणा है । ९ । भाषा द्रव्यवर्गणाके परमाणुपुद्गलस्कन्ध चारों भाषाओंके योग्य होते हैं तथा ढोल, भेरी, नगारा और मेघका गर्जन आदि शब्दोंके भी योग्य ये ही वर्गणायें होती हैं ।

शंका–नगारा आदिके शब्दोंकी भाषा संज्ञा कैसे है ?

✿ ता. प्रतौ '(अ) गहण–' अ. आ. प्रत्योः 'अगहण–' इति पाठः । ❀ ता. अ. आ. प्रतिषु '–गुणो इति पाठः । ✪ ता. प्रतौ '–वग्गणा (ए–) इति पाठः । ♠ अ. प्रतौ 'पाओग्गपटह–, इति पाठः :

ण, भासो व्व भासे त्ति उवयारेण काहलादिसद्दाणं पि तव्ववएससिद्धीदो।

भासादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८४ ॥

उक्कस्सभासादव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते तदियअगहणदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया वग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाण-मणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियअगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि। सगजहण्णादो उक्कस्सा अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। एसा दसमी वग्गणा १०। एदिस्से वि पोग्गलक्खंधा गहणपा-ओग्गा ण होंति। कुदो ? अण्णहा अगहणसण्णाणुववत्तीदो।

अगहणदव्ववग्गणाए उवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८५ ॥

तदियागहणदव्वउक्कस्सवग्गणाए✱ उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया मणद-व्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभाग-मेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया मणदव्ववग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो उक्कस्स-वग्गणा विसेसाहिया। विसेसो पुण सव्वजहण्णमणदव्ववग्गणाए अणंतिमभागो। तस्स को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसा एक्कार-समी वग्गणा ११। एदीए वग्गणाए दव्वमणणिव्वत्तणं¤ कीरदे।

समाधान — नहीं, क्योंकि, भाषाके समान होनेसे भाषा है इस प्रकारके उपचारसे नगारा आदिके शब्दोंकी भी भाषा संज्ञा है।

भाषा द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८४ ॥

उत्कृष्ट भाषा द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है। इसके आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार हैं। यह दसवीं वर्गणा है। १०। इसके भी पुद्गलस्कन्ध ग्रहणयोग्य नहीं होते हैं, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर इसकी अग्रहण संज्ञा नहीं बन सकती है।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा है ॥ ८५ ॥

तीसरी उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्य वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य मनोद्रव्यवर्गणा होती है। फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणा होती है। यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है। तथा विशेषका प्रमाण सबसे जघन्य मनोद्रव्यवर्गणाका अनन्तवाँ भाग है। इसका प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रतिभाग है। यह ग्यारहवीं वर्गणा है। ११। इस वर्गणासे द्रव्यमनकी रचना करते हैं।

✱ ता. प्रतौ '–दव्ववग्गणाए' इति पाठः। ¤ अ. प्रतौ '–मणोणिव्वत्तणं' आ. प्रतौ '–मणोणिव्वत्तं ण' इति पाठः।

मणदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८६ ॥

संपहि उक्कस्समणदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते चउत्थीए अगहण-दव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया वग्गणा होदि। तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण चउत्थअगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्स-वग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो उक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसा बारसमी वग्गणा १२ गह-णपाओग्गा ण होदि, अप्पाहियपरिमाणत्तादो।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥८७॥

चउत्थीए अगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया कम्मइयसरीरदव्ववग्गणा होदि। तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसि-द्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण कम्मइयदव्ववग्गणाए उक्क-स्सिया वग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिगा वग्गणा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो? जहण्णकम्मइयवग्गणाए अणंतिमभागो। तस्स को पडिभागो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसा तेरसमी वग्गणा १३। एदिस्से वग्गणाए पोग्गलक्खंधा अट्ठकम्मपाओग्गा।

कम्मइयदव्ववग्गणाणमुवरि *धुवक्खंधदव्ववग्गणा णाम ॥८८॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८६ ॥

उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर चौथी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है। इससे आगे एक एक प्रदेशके अधिक क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। यह बारहवीं वर्गणा है। १२। यह ग्रहणयोग्य नहीं होती है, क्योंकि, यह न्यूनाधिक परिणामवाली है।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८७ ॥

चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य कार्मणशरीर द्रव्यवर्गणा होती है। आगे एक एक प्रदेश अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर कार्मण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है। विशे-षका प्रमाण कितना है। जघन्य कार्मणवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है। इसका प्रतिभाग क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण इसका प्रतिभाग है। यह तेरहवीं वर्गणा है। १३। इस वर्गणाके पुद्गलस्कन्ध आठ कर्मोंके योग्य होते हैं।

कार्मण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा है ॥ ८८ ॥

* अ. आ. प्रत्योः '-क्खंधादव्व-' इति पाठः।

एसो धुवक्खंधणिद्देसो अंतदीवओ । तेण हेट्ठिमसव्ववग्गणाओ धुवाओ चेव अंतरविरहिदाओ त्ति घेत्तव्वं । एत्तो प्पहुडि उवरि भण्णमाणसव्ववग्गणासु अगहणभावो णिरंतरमणुवट्टावेदव्वो । संपहि कम्मइयउक्कस्सवग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया धुवक्खंधदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूणं धुवक्खंधदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसा चोद्दसमी वग्गणा १४ । आहार तेजा❋-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाओ चेव एत्थ परूवेदव्वाओ, बंधणिज्जत्तादो, ण सेसाओ, तासिं बंधणिज्जत्ताभावादो, ण सेसाओ, तासिं बंधणिज्जत्ताभावादो ? ण, सेसवग्गणपरूवणाए विणा बंधणिज्जवग्गणाणं☼ परूवणोवायाभावादो वदिरेगावगमणेण विणा णिच्छिदण्णयपच्चयपवुत्तीए अभावादो वा ।

धुवक्खंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम । ८९ ।

अंतरेण सह णिरंतरं गच्छदि त्ति सांतरणिरंतरदव्ववग्गणासण्णा एदिस्से अत्थाणुगया। संपहि उक्कस्सधुवक्खंधवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सवग्गणा

यह ध्रुवस्कन्ध पदका निर्देश अन्तदीपक है । इससे पिछली सब वर्गणायें ध्रुव ही हैं अर्थात् अन्तरसे रहित हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यहांसे लेकर आगे कही जानेवाली सब वर्गणाओंमें अग्रहणपनेकी निरन्तर अनुवृत्ति करनी चाहिए ।

उत्कृष्ट कार्मण वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यह चौदहवीं वर्गणा है । १४ ।

शंका–यहाँ पर आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा ही कहनी चाहिये, क्योंकि, वे बन्धनीय हैं । शेष वर्गणायें नहीं कहनी चाहिये, क्योंकि, वे बन्धनीय नहीं हैं ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, शेष वर्गणाओंका कथन किये बिना बन्धनीय वर्गणाओंके कथन करनेका कोई मार्ग नहीं है । अथवा व्यतिरेकका ज्ञान हुये बिना निश्चित अन्वयके ज्ञानमें प्रवृत्ति नहीं हो सकती, इसलिये यहाँ बन्धनीय व अबन्धनीय सब वर्गणाओंका निर्देश किया है ।

ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणा है ।। ८९ ।।

जो वर्गणा अन्तरके साथ निरन्तर जाती है उसकी सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है । यह सार्थक संज्ञा है । उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा होती है । आगे एक एक अंकके अधिक क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे

❋ ता० अ० प्रत्योः 'तेज-' इति पाठः । ☼ प्रतिषु 'वि एगबंधणिज्जवग्गणाणं' इति पाठः ।

अणंतगुणा। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसा पण्णारसमी वग्गणा १५। एसा वि अगहणवग्गणा चेव, आहार-तेजा-भासा-मण-कम्माणमजोगत्तादो।

सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णवग्गणा णाम ॥ ९० ॥

अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एदेण सरूवेण परमाणुपोग्गलसंचयाभावादो धुवसुण्णदव्ववग्गणा त्ति अत्थाणुगया सण्णा। संपहि उक्कस्सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाए उवरि परमाणुत्तरो परमाणुपोग्गलक्खंधो तिसु वि कालेसु णत्थि। दुपदेसुत्तरो वि णत्थि। एवं तिपदेसुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण पढमधुवसुण्णवग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसा सोलसमी वग्गणा १६ सव्वकालं सुण्णभावेण* अवट्ठिदा।

धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम ।९१।

एक्कस्स जीवस्स एक्कम्हि देहे उवचिदकम्म णोकम्मक्खंधो पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम। संपहि उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा होदि। एसा जहण्णिया पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा कस्स होदि? जो जीवो सुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण

अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यह पन्द्रहवीं वर्गणा है। १५। यह भी अग्रहणवर्गणा ही है; क्योंकि, यह आहार, तैजस, भाषा, मन और कर्मके अयोग्य है।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यवर्गणा है ॥ ९० ॥

अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें इस रूपसे परमाणु पुद्गलोंका संचय नहीं होता, इसलिये इसकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा यह सार्थक संज्ञा है। उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणाके ऊपर एक परमाणु अधिक परमाणुपुद्गलस्कन्ध तीनों ही कालोंमें नहीं होता, दो प्रदेश अधिक भी नहीं होता, इस प्रकार तीन प्रदेश अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर प्रथम ध्रुवशून्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यह सोलहवीं वर्गणा है। १६। जो सर्वदा शून्यरूपसे अवस्थित है।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ९१ ॥

एक एक जीवके एक एक शरीरमें उपचित हुए कर्म और नोकर्मस्कन्धोंकी प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है। अब उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है।

शंका– यह जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा किसके होती है?

समाधान– जो जीव सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें पल्यका असंख्यातवां भाग कम कर्मस्थिति

* अ. आ. प्रत्योः '-कालसुण्णभावेण ' इति पाठः।

ऊणियं कम्मट्ठिदिं खविद✡कम्मंसियलक्खणेण अच्छिदो। पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि तत्तो विसेसाहियाणि सम्मत्त-अणंताणुबंधि-विसंजोयणकंडयाणि अट्ठसंजमकंडयाणि चदुक्खुत्तो कसाय-उवसामणं च कादूण पुणो अपच्छिमे भवग्गहणे पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। तदो गब्भणिक्खमणादिअट्ठवस्संतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण❋ सजोगिजिणो जादो। तदो देसूणपुव्वकोडिं सव्वमोरालिय-तेजइयसरीराणं अधट्ठिदिगलणाए णिज्जरं करिय कम्मइयसरीरस्स गुणसेढिणिज्जरं कादूण चरिमसमयभवसिद्धियो जादो। एवंविहलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए सव्वजहण्णिया पत्तेयसरीरवग्गणा होदि; एदस्स देहे णिगोदजीवाणमभावादो।

संपहि एदिस्से वग्गणाए माहप्पजाणावणट्ठं ट्ठाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा— ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणूणं तिण्णि पुंजे उवरि ट्ठविय तेसिं हेट्ठा तेसिं चेव विस्ससोवचयपुंजे च ट्ठविय पुणो एदेसिं छण्णं जहण्णपुंजाणमुवरि परमाणुवड्ढावणविहाणं वुच्चदे- खविदकम्मंसियलक्खणेणागदस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स ओरालियसरीरविस्ससोवचयपुंजम्मि एगविस्ससोवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे तमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो तत्थेव⊗ दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्त✿ट्ठाणं होदि। तिसु◆ परमाणुसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चदुसु विस्ससोवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु पंचममपुण-

कालतक क्षपित कर्मांशिकरूपसे रहा। पुनः जिसने पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण संयमासंयमकाण्डक, इनसे कुछ अधिक सम्यक्त्वकाण्डक तथा अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनाकाण्डक तथा आठ संयमकाण्डक करते हुए चारबार कषायकी उपशामना की। पुनः अन्तिम भवको ग्रहण करते हुए पूर्वकोटिप्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर गर्भनिष्क्रमण कालसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होनेपर सम्यक्त्व और संयमको एकसाथ प्राप्त करके सयोगी जिन हो गया। अनन्तर कुछ कम पूर्वकोटि कालतक औदारिक और तैजसशरीरकी अधःस्थितिगलनाके द्वारा पूरी निर्जरा करके तथा कार्मणशरीरकी गुणश्रेणिनिर्जरा करके अन्तिम समयवर्ती भव्य हो गया। इस प्रकार आकर जो अयोगीकेवलीके अन्तिम समयमें स्थित है उसके सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है, क्योंकि, इसके शरीरमें निगोद जीवोंका अभाव है।

अब इस वर्गणाके माहात्म्यका ज्ञान करानेके लिए स्थानप्ररूपणा करते हैं। यथा— औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणुओंके तीन पुञ्ज ऊपर स्थापित करके और उनके पहले ही विस्रसोपचयोंके पुञ्ज स्थापित करके फिर इन जघन्य छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणुओंके बढानेकी विधि कहते हैं। क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर जो अन्तिम समयवर्ती भव्य हुआ है उसके औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढनेपर वह अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः उसीमें दो परमाणुओंके बढनेपर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन परमाणुओंके बढनेपर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। चार विस्रसोपचय परमाणु

✡ अ. प्रतौ 'कम्मट्ठिदिं (बधिय-) खविद-' इति पाठः। ❋ ता. प्रतौ '-जुगवं घेत्तूण' इति स्थाने 'घेत्तूण जुगवं' इति पाठः। ⊗ ता. प्रतौ. 'तत्थ' इति पाठः। ✿ अ. प्रतौ 'तदियपुणरुत्त', इति पाठः। ◆ आ. प्रतौ 'तमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु' इति पाठः।

रुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगुत्तरपरमाणुवड्ढीए वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरविस्स-सोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति। एवं वड्ढाविदे ओरा-लिय-सरीरविस्ससोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि भवंति। एसा ट्ठाणपरूवणा संभवं पडुच्च कीरदे। को संभवो णाम? इंदो मेरुं पल्लट्टेदुं समत्थो त्ति एसो संभवो णाम। वत्तिसरूवेण एत्तिएसु ट्ठाणेसु समुप्पण्णेसु को दोसो होदि? ण, सव्वजीवरासीदो सिद्धाणमणंतगुणत्तप्पसंगादो। ण चुप्पण्णट्ठाणमेत्ता सिद्धा अत्थि; अदीदकालस्स असंखेज्जदिभागाणं सिद्धाणं ट्ठाणमेत्त✲पमाणत्तविरोहादो।

पुणो अण्णे जीवे❋ खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि विस्ससोवचएण सह एगपरमाणुणा ओरालियसरीरमब्भहियं कादूणच्छिदे एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? परमाणुत्तरकमेण पुव्वं वड्ढाविदओरालियसरीरविस्स-सोवचयपुंजेण सह संपहि अहियएगोरालियसरीरपरमाणुदंसणादो। पुव्वुत्तोरालियस-रीर-सव्वजहण्णपरमाणुपुंजादो✿ संपहियओरालियसरीरपरमाणुपुंजो परमाणुत्तरो होदि। पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियखवगं घेत्तूण एदस्स ओरालियसरीरविस्स-सोवचयपुंजम्मि परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरादि♣कमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तेसु

पुद्गलोंके बढनेपर पाँचवां अपुनरुक्त स्थान होता है। इसप्रकार औदारिकशरीरके विस्रसोपचय-पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होनेतक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुकी वृद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार वृद्धि करनेपर औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं। यह स्थानप्ररूपणा सम्भव सत्यकी अपेक्षा की है।

शंका-- सम्भवसत्य किसे कहते हैं?

समाधान-- 'इन्द्र मेरुको पलटनेमें समर्थ है।' इसे सम्भव कहते हैं।

शंका-- व्यक्तरूपसे इतने स्थानोंके उत्पन्न होनेपर क्या दोष उत्पन्न होता है?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब जीवोंसे सिद्ध अनन्तगुणे प्राप्त होते हैं। परन्तु यहाँ जितने स्थान उत्पन्न किये गये हैं उतने सिद्ध हैं नहीं, क्योंकि, सिद्ध अतीत कालके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, इसलिए उन्हे उक्तस्थानप्रमाण माननेमें विरोध आता है।

पुनः क्षपित कर्मांशिकविधिसे आकर सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणाके ऊपर विस्रसो-पचयसहित एक परमाणुसे औदारिकशरीरको अधिक करके अन्य एक जीवके स्थित होनेपर यह भी अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, उत्तरोत्तर एक परमाणुके क्रमसे पहले बढाए हुए औदारिक-शरीर विस्रसोपचय पुंजके साथ इस समय औदारिकशरीरका एक परमाणु अधिक देखा जाता है। पूर्वोक्त औदारिकशरीरके सबसे जघन्य परमाणुपुंजकी अपेक्षा साम्प्रतिक औदारिकशरीर परमाणु-पुंज एक परमाणु अधिक है। पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोडकर और साम्प्रतिक क्षपकको ग्रहणकर इसके औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक आदिके क्रमसे

✲ ता. प्रतौ 'ट्ठाणमेव (त्त)-' अ प्रतौ 'ट्ठाणमेव-' इति पाठः। ❋ ता. प्रतौ 'अण्णो जीवो' इति पाठः। ✿ आ. प्रतौ '-जहण्णपुंजादो' इति पाठः। ♣ ता. आ. प्रत्योः '-पुंजम्मि परमाणुत्तरादि-' इति पाठः।

विस्ससोवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति।

तदो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णेण ओरालियसरीरपुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्ससोवचयपुंजं पि दोण्णं परमाणूणं विस्सासुवचयपुंजेण अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि। कारणं पुव्वं व जाणिदूण वत्तव्वं। संपहि उप्पण्णट्ठाणस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले✱वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं दो-तिण्णिआदि जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तओरालियविस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अणंताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति।

तदो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियसव्वजहण्णोरालियसरीरं तिपरमाणुत्तरं कादूण सव्वजहण्णोरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजं☼ तिण्णं परमाणूणं विस्ससोवचएहि अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एगवारेण वड्ढूणागदं संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं। एवमणेण✲ विहाणेण ओरालियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पप्पणो तप्पाओग्गउक्कस्सदव्वपमाणं पत्ता त्ति। णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणि सव्वजहण्णाणि चेव। एदेसिं चदुण्णं वड्ढीए विणा सविस्ससोवचयओरालियसरीरस्सेव कथं वड्ढी होदि? ण, तज्जहण्णाविरोहिउक्कस्सवड्ढीए एत्थ गहणादो।

सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे ही अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं।

पुनः क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको दो परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुंजको भी विस्रसोपचय पुंजकी अपेक्षा दो परमाणु अधिक करके अन्य जीवके स्थित होनेपर अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। कारण पहलेके समान जान कर कहना चाहिए। अब इस समय उत्पन्न हुए स्थानके औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढ़नेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार दो, तीनसे लेकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिक विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अनन्त अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं।

अनन्तर क्षपित कर्मांशिकरूपसे प्राप्त सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको तीन परमाणु अधिक करके तथा सबसे जघन्य विस्रसोपचय पुंजमें विस्रसोपचयके तीन परमाणु अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके अनन्तर पिछले स्थानसे एकबार वृद्धि हो कर प्राप्त हुआ साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। इस प्रकार इस विधिसे अपने-अपने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणके प्राप्त होने तक औदारिकशरीरके दो पुंज बढाने चाहिये। इतनी विशेषता है कि इन सब स्थानोंमें तैजस और कार्मणशरीर सबसे जघन्य रहते हैं।

शंका—इन चारों (तैजस और कार्मणशरीर तथा उनके विस्रसोपचय) की वृद्धि हुए बिना अपने विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीरकी ही वृद्धि कैसे होती है?

✱ ता० प्रतौ 'एगपरमाणुत्तरपोग्गले' इति पाठः। ☼ अ० प्रतौ 'पुंजम्मि' इति पाठः।
✲ ता० प्रतौ 'णे (ए) वमणेण' अ० आ० प्रत्योः 'णवमणेण' इति पाठः।

तदो अण्णो वि जीवो खविदकम्मंसियो विस्ससुवचयेहि सह ओरालियसरीर-मुक्कस्सं कादूण पुणो तेजइयसरीरसव्वजहण्णविस्ससुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले वड्ढाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तदो अण्णेण जीवेण तेजइयसरीरविस्ससुवचय-पुंजे दुपरमाणुत्तरे कदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। सविस्ससुवचयमोरालियसरीरं तप्पाओग्गुक्कस्सतेजइयसरीरपरमाणुपुंजो जहण्णो। सविस्सासुवचयं कम्मइयसरीरं पि एत्थ जहण्णं चेव।

पुणो अण्णे जीवे तेजइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं तिपरमाणुत्तरं कादूणच्छिदे अण्ण-मपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं परमाणुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचय-परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदो अण्णम्हि* जीवे खविदकम्मंसिये तथा ओघक्कस्सीकय-विस्ससुवचयमोरालियसरीरे विस्ससुवचएहि सह जहण्णीकदकम्मइयसरीरे सव्वजहण्ण-तेजइयसरीरं परमाणुत्तरं काऊण तस्सेव विस्ससुवचयपुंजं एगपरमाणुविस्ससुवचएहि अब्भहियं कादूणच्छिदे अणंतरट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि। कारणं जाणिदूण वत्तव्वं। एवं वड्ढावेदव्वं जाव तेजइयसरीरदोपुंजा तप्पाओग्गुक्कस्सा जादा त्ति। किं तप्पा-ओग्गुक्कस्सत्तं? जोगवड्ढीए विणा ओकड्डुक्कड्डुणवसेण जत्तियाणं परमाणूणं सविस्ससु-

---

समाधान-नहीं, क्योंकि इन चारोंके जघन्य रहते हुए उनकी अविरोधी उत्कृष्ट वृद्धि ही यहाँ ग्रहण की गई है।

पुनः अन्य क्षपित कर्मांशिक जीवके विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीरको उत्कृष्ट करके अनन्तर तैजसशरीरके सबसे जघन्य विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। अनन्तर अन्य जीवके द्वारा तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें दो परमाणु अधिक करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। यहाँ पर विस्रसोपचय सहित औदारिक शरीर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट है। तैजसशरीर परमाणु पुंज जघन्य है और विस्रसोपचयसहित कार्मण शरीर भी यहाँ पर जघन्य है।

पुनः अन्य जीवके तैजस शरीरके विस्रसोपचय परमाणु पुंजको तीन परमाणु अधिक करके स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार परमाणु अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयरूप परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अनन्तर जिसने विस्रसो-पचयसहित औदारिकशरीरको ओघ उत्कृष्ट किया है और विस्रसोपचयसहित कार्मणशरीरको जघन्य किया है तथा तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके व उसीके विस्रसोपचयपुंजको विस्रसोपचयके एक परमाणुसे अधिक करके जो क्षपित कर्मांशिक अन्य जीव स्थित है उसके अनन्तर स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। कारणका जानकर कथन करना चाहिये। इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुंज तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट होने तक बढाने चाहिये।

शंका-यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्टसे क्या तात्पर्य है ?

समाधान-योगवृद्धिके बिना उत्कर्षण और अपकर्षणके द्वारा विस्रसोपचयसहित जितने

---

* ता० प्रतौ 'अण्णेहि' अ० आ० प्रत्योः 'अण्णंहि' इति पाठः।

वचयाणं वड्ढी संभवदि तत्तियमेत्तपरमाणूहि अब्भहियत्तं । जोगादो वड्ढी किं ण घेप्पदे? ण, तिण्णं सरीराणमक्कमेण वुड्ढिप्पसंगादो ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्ससुवचएहि सह ओरालिय-तेजासरीराणि तप्पाओग्गुक्कस्साणि कादूण कम्मइयसरीरविस्ससुवचया परमाणुत्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए अच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्ससुवचयेहि सह तप्पाओग्गुक्कस्सीकयओरालिय-तेजासरीरो✿ कम्मइयसरीरं पडि खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरविस्ससुवचयजहण्णपुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण अच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं कम्मइयसरीरविस्ससोवचया परमाणु❀त्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति ।

तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपर-

---

परमाणुओंकी वृद्धि सम्भव हो मात्र उतने परमाणु अधिक करना यही यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट पदसे तात्पर्य है ।

शंका-योगसे परमाणुओंकी वृद्धि क्यों नहीं ली गई है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, योगसे परमाणुओंकी वृद्धि ग्रहण करने पर तीनों शरीरोंकी युगपत् वृद्धि प्राप्त होती है ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक अन्य एक जीव लीजिये जो विस्रसोपचय सहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट करके कार्मणशरीरके विस्रसोपचयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक-एक परमाणु बढाता है । तब पहलेके समान क्षपित कर्मांशिक इस अन्य जीवके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।

पुनः अन्य एक क्षपित कर्मांशिक जीव लीजिये जिसने अपने विस्रसोपचयसहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट किया है तथा जो कार्मणशरीरके प्रति क्षपित कर्मांशिक है उसके कार्मणशरीरके विस्रसोपचय जघन्य पुंजमें दो परमाणु अधिक करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर उस समय अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक कार्मणशरीरके विस्रसोपचयको एक एक परमाणु द्वारा बढाना चाहिये ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक एक अन्य जीव लीजिये जो अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजको सब

✿ अ. आ. प्रत्योः 'सरीरा' इति पाठः । ❀ ता. प्रतौ. 'चयपरमाणु' इति पाठः ।

माणूहि वड्ढाविय ट्ठिदो❋। ताधे पुव्विल्लट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि। पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियक्खवगस्स कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एगपरमाणुणा वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपरमाणुपोग्गलेसु कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजेहि वड्ढिदेसु तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं पुव्वं व परमाणुत्तरं काऊण अच्छिदो। ताधे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि। एवं वड्ढावेदव्वं जाव जोगेण विणा ओकड्डुक्कड्डुणाहि✿ चेव जायमाणवड्ढीए उक्कस्सवड्ढि त्ति।

पुणो एदेहि छहि दव्वेहि जोगेणेगवारं छसु वि दव्वेसु वड्ढिददव्वमेत्तं वड्ढिदूण ट्ठिदो सरिसो। एवमसंखेज्जवारं वड्ढावेदव्वं जाव अजोगिचरिमसमयदव्वं✠ सव्वुक्कस्सं जादं◆ त्ति। तत्थ चरिमवियप्पं भणिस्सामो। तं जहा--

गुणिदकम्मंसियो सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि कादूण पुणो कालं करिय दो-तिण्णिभवग्गहणाणि तिरिक्खेसुप्पज्जिय पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि☮ सजोगिजिणो होदूण देसूणपुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं काऊण अजोगिचरिमसमए ट्ठिदस्स पत्तेयसरीरवग्गणा

जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके द्वारा बढाकर स्थित है उसके सब पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है।

पुन: पूर्वोक्त क्षपकको छोडकर साम्प्रतिक क्षपकके कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणुकी वृद्धि करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुपुद्गलोंके बढाने पर उस समय पहलेके समान क्षपितकर्मांशिक जो अन्य जीव अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको पहलेके समान एक परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। इस प्रकार योगके बिना अपकर्षण-उत्कर्षणके द्वारा ही जो वृद्धि होती है उससे उत्कृष्ट वृद्धिके होने तक वृद्धि करनी चाहिये।

पुन: इन छह द्रव्योंके साथ, योगके द्वारा एक बार छहों द्रव्योंमें बढाये हुये द्रव्यके बराबर वृद्धि करके स्थित हुआ जीव समान है। इस प्रकार अयोगी गुणस्थातके अन्तिम समयके द्रव्यके सर्वोत्कृष्ट होने तक असंख्यात बार वृद्धि करनी चाहिये। उसमें अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं। यथा--

कोई एक गुणित कर्मांशिक जीव सातवीं पृथिवीमें तैजस और कार्मण शरीरको उत्कृष्ट करके पुन: मरकर दो-तीन भवतक तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। पुन: गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षका होनेके बाद सयोगी जिन होकर कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयम गुणश्रेणि निर्जरा करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें

❋ ता. प्रतौ (वड्ढावि) वड्ढिदो ' इति पाठः। ✿ ता. प्रतौ '-णादि ' इति पाठः। ✠ ता. प्रतौ '-दव्वे ' आ. प्रतौ '-दव्व' इति पाठः। ◆ ता. अ. आ. प्रतिषु ' जादे ' इति पाठः। ☮ ता. प्रतौ ' याण (मु-) वरि ' अ. आ. प्रत्योः ' याणवरि ' इति पाठः।

पुव्वुत्तपत्तेयसरीर❀वग्गणाए सह सरिसी होदि । संपहि एत्थ वड्ढी णत्थि; पत्तसव्वुक्कस्सभावादो ।

संपहि अजोगिदुचरिमचरिमसमए लब्भिस्सामो । तं जहा– गुणिदकम्मंसिओ सत्तमाए पुढवीए तेजा–कम्मइयसरीरवग्गणमुक्कस्सं✡ करेमाणो दुचरिमगुणसेडिदव्वेण♣ कम्मइय-तेजोरालियसरीराणं दुचरिमगोपुच्छाहि य ऊणमुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणं कादूण अजोगिदुचरिमसमए अच्छिदस्स चरिमसमयवग्गणाए सह दुचरिमसमयवग्गणा सरिसी होदि ।

पुणो चरिमसमय अजोगिवग्गणं मोत्तूण दुचरिमसमयअजोगिखवगपत्तेयसरीरवग्गणा पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणपमाणं पत्ता त्ति । एवं तिचरिम-चदुचरिमादिसमएसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पुध पुध विस्ससुवचयपरमाणू च वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सजोगिपढमसमओ⊗ त्ति । संपहि एत्तो हेट्ठा ओदारेदुं ण सक्कदे; खीणकसायचरिमसमए बादरणिगोदवग्गणाए उवलंभादो । तेण सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेरइयदव्वमस्सिदूण वड्ढि भणिस्सामो । तं जहा––

गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिमसमए ✿ वट्टमाणस्स तेजा-कम्मइयसरीराणं चत्तारिपुंजेहि पढमसमयसजोगिस्स तेजा कम्मइयसरीराणं चत्तारि पुंजा विसेसहीणा। पढमसमयसजोगिस्सओरालिय♠सरीरपरमाणुपोग्गलपुंजादो णेरइय

स्थित हुआ । उसके प्रत्येक शरीरकी वर्गणा पूर्वोक्त प्रत्येकशरीरकी वर्गणाके समान होती है। अब यहाँ पर वृद्धि नहीं है; क्योंकि, इसने सर्वोत्कृष्टपनेको प्राप्त कर लिया है ।

अब अयोगीके द्विचरम समयका आश्रय करके कथन करते हैं । यथा– जिस गुणितकर्मांशिक जीवने सातवीं पृथिवीमें तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी वर्गणाको उत्कृष्ट किया है और जो द्विचरम गुणश्रेणिद्रव्यसे तथा कार्मण, तैजस, और औदारिकशरीरकी द्विचरम गोपुच्छासे न्यून उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाको करके अयोगीके द्विचरम समयमें स्थित है उसके अन्तिम समयकी वर्गणाके साथ, द्विचरम समयकी वर्गणा समान होती है ।

पुनः अयोगीके अन्तिम समयकी वर्गणाको छोडकर अयोगीके द्विचरम समयकी क्षपक प्रत्येकशरीर वर्गणा अपने उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके प्रमाणको प्राप्त होने तक पूर्वोक्त विधिसे बढानी चाहिये । इस प्रकार त्रिचरम, चतुःचरम आदि समयोंमें औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर तथा उनके पृथक्-पृथक् विस्रसोपचय परमाणु बढाकर उतारते हुये सयोगी गुणस्थानके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये । अब इससे पीछे उतार कर ले जाना संभव नहीं है; क्योंकि क्षीणकषायके अन्तिम समयमें बादर निगोद वर्गणा उपलब्ध होती है, इसलिये सातवीं पृथिवीके अन्तिम समयवर्ती नारकीके द्रव्यका आश्रय करके वृद्धिका कथन करते हैं । यथा––

गुणित कर्मांशिक विधिसे आकर सातवीं पृथ्वीमें अन्तिम समयमें विद्यमान नारकीके तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्जोंकी अपेक्षा प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्ज विशेष हीन होते हैं । प्रथम समयवर्ती सयोगी

❀ ता० प्रतौ 'पुव्वुत्तसरीर-' इति पाठः । ✡ ता० अ० प्रत्योः '-कम्मइयवग्गणमुक्कस्सं इति पाठः । ♣ अ० प्रतौ '-दव्वेगुण' इति पाठः । ⊗ ता० प्रतौ ' सजोगिचरिमपढम- ' इति पाठः। ✿ आ० प्रतौ 'तेण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिम-, इति पाठः। ♠ ता० प्रतौ '-सजोगिस्स तेजा-कम्मइय-ओरालिय- , इति पाठः।

चरिमसमए वेउव्वियपरमाणुपोग्गलपुंजो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो । तं कथं परिच्छिज्जदि त्ति वुत्ते बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं वुत्तपदेसप्पाबहुआदो सुत्तादो । तं जहा– सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स पदेसग्गं । वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि✽ अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एदे गुणगारा कुदो सिद्धा ? अविरुद्धाइरियवयणादो ।

पढमसमयसजोगिस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजादो चरिमसमयणेरइयस्स वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजो असंखेज्जगुणो । कुदो एदं णव्वदे ? बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स भणिदप्पाबहुगसुत्तादो । तं जहा– ओरालियसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो । तस्सेव जहण्णयस्स

जिनके औदारिकशरीर परमाणु पुद्गलपुञ्जसे नारकीके अन्तिम समयमें वैक्रियिक परमाणु-पुद्गलपुञ्ज असंख्यातगुणा होता है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शंका–– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–– बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके कहे गए प्रदेशअल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है । यथा– औदारिकशरीरके प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं । इनसे वैक्रियिकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इनसे आहारकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इनसे तैजसशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार हैं । इनसे कार्मणशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है ।

शंका–– ये गुणकार किस प्रमाणसे सिद्ध हैं ?

समाधान–– अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे सिद्ध हैं ।

प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जसे अन्तिम समयवर्ती नारकीके वैक्रियिकशरीरका विस्रसोपचय पुञ्ज असंख्यातगुणा है ।

शंका–– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–– बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयके कहे गए अल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है– यथा– जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे

✽ ता० प्रतौ ' भवसिद्धिएहि ' इति पाठः ।

उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्ससुवचओ अणंतगुणो। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्ससुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्ससुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तेयासरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे☼ उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। गुणगारो सव्वत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एदमप्पाबहुगं मुक्कजीवाणं ण जीवसहियाणं;

स्तोक है। उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। वैक्रियिकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। आहारकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। तैजसशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपजय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य-पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार सर्वत्र सब जीवोंसे अनन्तगुणा है। यह अल्पबहुत्व जो जीवोंसे रहित होते हैं उनका होता है। जो जीवोंसे युक्त होते हैं उनका नहीं होता, अन्यथा

☼ ता० आ० प्रत्योः 'तेयासरीरस्स जहण्णयस्स उक्कस्सपदे' इति पाठः।

विस्सासुवचयपहाणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो विस्सासुवचयपहाण♠जहण्णबादर-णिगोदवग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो ।

जीवसहियाणं पुण अप्पाबहुगं उच्चदे-सव्वत्थोवो जहण्णओ ओरालियसरीरस्स विस्सासुवचओ । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो । आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेजइयसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो । अभव-सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तगुणगारो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कम्मइयसरीरम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? तेजइयगुणगारो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेण कारणेण पढमसमयसजोगिस्स ओरालियादिछप्पुंजदव्वेण

विस्रसोपचयप्रधान उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणासे विस्रसोपचयप्रधान जघन्य बादर निगोद वर्ग-णाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग आता है ।

जो जीवोंसे युक्त हैं उनका अल्पबहुत्व आगे कहते हैं-औदारिकशरीरका जघन्य विस्रसो-पचय सबसे स्तोक है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । वैक्रियिकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । आहारकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । तैजसशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुण-कार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । कार्मणशरीरके प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? तैजसशरीर गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इस कारणसे प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिक आदि छह पुञ्ज द्रव्यके साथ वैक्रियिक आदि छह पुञ्जका द्रव्य समान है ।

♠ अ० आ० प्रत्योः '-पहाणं' इति पाठः ।